पाठ - 5

मोज़े पर मसह

الدرس الخامس - هندي

المسح علي الخفين

इस्लाम के आसान दीन होने की एक दलील यह है कि उसने मोज़े पर मसह करने को जायज़ क़रार दिया है। और यह नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है।
अम्र बिन उमैय्या रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْسَحُ عَلَى عِمَامَتِهِ وَخُفَّيْهِ

मैंने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पगड़ियों और मोज़ों पर मसह करते देखा, (सही बुख़ारी 205)
मुगीरा बिन शोअबा रजियल्लाहु अन्हु बयान करते है कि

بَيْنَا أَنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ إِذْ نَزَلَ فَقَضَى حَاجَتَهُ، ثُمَّ جَاءَ فَصَبَبْتُ عَلَيْهِ مِنْ إِدَاوَةٍ كَانَتْ مَعِي، فَتَوَضَّأَ وَمَسَحَ عَلَى خُفَّيْهِ»

एक रात मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था कि आप उतरे और शौच के लिए गये। फिर आप आए तो मैं ने अपने साथ मौजूद बालटी से पानी उंडेला तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुज़ू किया और अपने दोनों मोज़ों पर मसह किया, (मुत्तफ़क़ अलैह, बुख़ारी 203, मुस्लिम 274)
अलबत्ता मोज़ों पर मसह के लिए शर्त यह है कि इंसान ने पाकी यानी वुज़ू की हालत में मोज़े पहने हों। मसह की कैफ़ियत यह होगी कि भीगे हुए हाथों को ज़ाहिरी तौर पर फेरा जाए। मोज़ों के भीतरी हिस्सों पर मसह नहीं किया जायेगा
मसह की अवधि मुक़ीम के लिए एक दिन और एक रात है। और मुसाफ़िर (यात्री) किसी ऐसी यात्रा पर हो कि उसके लिए नमाज क़सर करना जायज़ हो तो उसके लिए मसह की अवधि तीन दिन और तीन रात है। मसह की अवधि समाप्त हो जाने या मसह के बाद मोज़ा उतार लेने, या नापाक होने की स्थिति में मसह बातिल हो जायेगा। क्योंकि उस वक्त नहाना ज़रूरी हो जाता है।

वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें

1. शरीर से किसी प्रकार का विकार बाहर आने की स्थिति में वुज़ू टूट जाता है। जैसे पेशाब, पाखाना, हवा, मणि, मज़ी, वदी अथवा खून आदि।
2. नींद यानी सो जाना
3. ऊंट का गोश्त खाना
4. बेहोश हो जाना या होश खो देना